International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 43-45

गाँव के युवा वर्ग में बढ़ती नशाखोरी : समस्या और समाधान

सनातन सिंह ओझा, बी०डी०एस० गौतम
समाजशास्त्र विभाग, नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
भारतीय समाज के लिए मादक पदार्थ का प्रयोग बहुत खतरनाक है। इसका प्रयोग केवल अशिक्षित, गरीब किसान ही नहीं करते बल्कि सभी वर्गों के व्यक्ति करते हैं। सभ्यता के इतिहास में नशीली दवाओं का प्रयोग बहुत पुराना है। मादक पदार्थ काम करने में बाधा डालते हैं तथा इससे कार्य करने की इच्छा शक्ति कम हो जाती है। नशा अनेक बुराईयों की जड़ है। नशे में व्यक्ति अपने आपको सर्वशक्ति सम्पन्न बादशाह समझता है। उत्पादकता, प्रति व्यक्ति कम आय और बेराजगारी आदि ऐसी बाधाएं हैं जो मनुष्य को उसके मार्ग से भटकाकर दुर्व्यसनों का शिकार बना देती हैं। अतः युवाओं को नशीले पदार्थों से मुक्ति दिलवाने के लिए जागरुकता जरूरी है। जागरुकता का मुख्य घटक शिक्षा है।

मूल शब्द : भारतीय समाज, युवा वर्ग, नशाखोरी।

प्रस्तावना
भारतीय समाज के लिए मादक पदार्थ का प्रयोग बहुत खतरनाक हो गया है। इसके प्रयोग से सामाजिक विभिन्नताएँ लगभग समाप्त हो गई है। मादक पदार्थ की वर्तमान सर्वप्रियता ने इसे सब प्रकार के पेशों में फैला दिया है जिसमें थिएटर, फिल्में, कला, शिक्षा, भवन निर्माण राजस्व आदि शामिल हैं। यह सर्वप्रिय भावना पनप चुकी है कि मादक पदार्थ के प्रयोग से तनाव कम होता है तथापि वह व्यक्ति को शान्ति प्रदान करती है और अन्य दन्त कथाएँ भी हैं जिनकी हम चर्चा करने जा रहे हैं। भारतीय समाज में इस महामारी को फैलाने में बहुत अधिक सफल सिद्ध हुई है। सभ्यता के इतिहास में नशीली दवाओं (ड्रग्स) का प्रयोग बहुत पुराना है। मानवीय मश्तिष्क में नियन्त्रण की मशीनरी को ड्रग्स साधारण रूप से काम करने में बाधा डालती है। ये कार्य करने की इच्छा शक्ति को कम करती है जिससें सामान्य व्यक्ति भी इसका शिकार हो जाता है। गाँवों में चार प्रकार के लोगों को लत लग जाती है, जिससे छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। पहला वर्ग किसान तथा मजदूर का है जो दिन भर मेहनत मजदूरी करते हैं और सोचते हैं कि शाम को कोई नशा करके श्रम का परिहार किया जाए अर्थात् मनोरंजन किया जाए। ऐसे लोगों का प्रतिशत 30 से 35 प्रतिशत के बीच में है। इनमें मजदूरों की संख्या अधिक है। दूसरे वर्ग में जमींदार, भूमिपति और साहूकार आते हैं जो अपनी ऐय्याशी, वैभव की चमक–दमक तथा मनोरंजन के लिए नशा करते हैं। सुरा और सुन्दरी वैभव की अनुचरी होती हैं जहाँ अनाप–शनाप धन है, वहाँ ये चुपचाप दबे पाँव पहुँच जाती हैं। शाम को चौपाल, दालान, बैठक, बरामदा में खुले आम नशा करते हैं और साथ में मुनीम, चहेते भी आ जाते हैं। तीसरा वर्ग नवयुवकों तथा बेकार लोगों का है जो जीवन से निराश हो चुके हैं और अपना गम नशे से दूर करना चाहते हैं। इसकी पूर्ति के लिए पहले तो वे अपने घरों में चोरी करते हैं आगे चलकर गाँवों तथा आसपास के इलाकों में चोरी करते हैं, डकैती डालते हैं। इसके चलते वे अपराधी बन जाते हैं फिर न तो उन्हें पुलिस छोड़ती है और न ही नशा। अजीब कशमकश में उनका जीवन बीतता है। चौथे वर्ग में वे लोग आते हैं जो बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू, गोल्डमोहर, भाँग, गाँजा, ताड़ी, जैसे नशे को वस्तुतः नशा मानते ही नहीं हैं। उनका मानना है कि ''भाँग, गाँजा तो शिव की बूटी है। शिव इसका खुलकर पान करते हैं। इसलिए उनके भक्तों को भी उस प्रसाद को पाने का पूर्ण अधिकार है। ''यह उनका भ्रम है। ताड़ी जब तक नीरा है, तब तक पुष्टिकारक है। नीरा खजूर या ताड़ के वृक्ष से सूर्य की पहली किरण निकलने से भी पहले निकाला गया रस होता है जो एक प्रकार की औषधि है। लोग स्वास्थ्य के लिए इसका उपयोग करते हैं परन्तु नशेबाज नीरा को धूप लगाकर, मसाले आदि मिलाकर उसे उबाल कर नशे का रूप दे देते हैं, फिर जमकर ताड़ी पीते हैं।
इसी प्रकार भांग इतनी खतरनाक नहीं है, यदि उसे सोने से पूर्व दवा के समान अल्प मात्रा में लिया जाए तो परन्तु शेष नशे जानलेवा होते हैं। बिहार, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों के गाँवों में इन नशों के अलावा अमीरों, साहूकारों के घर देशी तथा विलायती शराब भी चलती है।

अमीर और नशाखोरी
महाजन, जमींदार जैसे अमीर वर्ग अपने नषे के साथ नशाखोरों का एक वर्ग तैयार करते हैं। पहले उन्हें फुसलाकर, बुलाकर पिलाते हैं। तब वे उनका विभिन्न प्रकार से शोषण करते हैं। यथा– पहले, उँचे सूद पर रुपये देना, चक्रवृद्धि ब्याज में उनकी जमीन–जायदाद हथियाना, उन्हें ऐसा बना देना कि वे आत्मनिर्भर तथा संतुष्ट किसान से साधारण मजदूर हो जाते हैं उनके दास, आश्रित, लाचार। पंजाब, हरियाणा आदि के गाँवों में जहाँ उन्नत पैदावार है, सम्पन्नता है, वहाँ शराब आदि के साथ स्मैक का भी प्रचलन है। नशा अनेक बुराईयों की जड़ है। नशे में मनुष्य अपने को बादशाह समझता है – सर्वशक्ति सम्पन्न, फिर मार–पीट और मुकद्मेबाजी। इसी में उनके धन तथा श्रम शक्ति का बड़ा भाग लग जाता है।
माओ से तुंग ने लिखा है ''शाश्वत जागरुकता ही आजादी का मूल है।'' जागरुकता, नारेबाजी, भाषण अथवा उपदेश से नहीं आती। शिक्षा इसका मुख्य घटक है। शिक्षा वह प्रकाश–पुंज है, जो अज्ञानता, जड़ता, अंधविश्वास, दुर्व्यसन के अंधकार को चीरकर सत्य के प्रकाश के दर्शन कराती है। लाख प्रयत्नों के बाबजूद इस दिशा में हम उल्लेखनीय कार्य नहीं कर पाये हैं इसके कारणों की तह में जाएं तो पता चलेगा कि अशिक्षित वर्ग में जागरुकता न होना स्वाभाविक है। यह उनकी विवशता भी है, परन्तु गाँवों में

सच्चे अर्थों में पढ़े–लिखे, प्रगतिशील और जागरुक लोग हैं, उन्हें इसकी जरा भी परवाह नहीं है कि उनके अशिक्षित भाई भी उनके अंग हैं। उनके थोड़े से सहयोग से इन अशिक्षितों का जीवन सुधर सकता है। अल्प उत्पादकता प्रति व्यक्ति कम आय तथा बेरोजगारी आदि ऐसी बाधाएं हैं जो मनुष्य को अपने पथ से भटका देता है, दुर्व्यसनों का शिकार बना देती है। कृषि को बहुफसली बनाकर, कृषि के समानान्तर लघु तथा कुटीर उद्योगों को चलाकर तथा अन्य संसाधनों के विकास द्वारा बेरोजगारी पर बहुत हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। कृषि और गाँव के विकास के लिए सरकार के पास न केवल कोई योजनाएँ हैं। समस्याओं को ग्राम पंचायत आसानी से हल कर सकती है। वह सरकार और गाँव के मध्य समन्वय कर सकती है। मुखिया प्रधान अपनी देख–रेख में विकास कार्य करा सकते हैं विकास की रोशनी फैली, जागरुकता आई तो रोजगार के बढ़े सृजनशीलता में वृद्धि हुई।

हमारा समाज इसलिए भी विश्रृंखलित और विघटित है कि अपनी विरासत, परम्परा, सांस्कृतिक मिथक आदि भूल गए हैं। रामलीला, अखंड रामायण पाठ, नाटक, प्रवचन आदि से आप परिचित होंगे। इस ओर उस वर्ग का भी ध्यान जाएगा जो निम्न होकर नशे को आशा की जननी मान बैठा है।

खान (1986) ने युवाओं में नशाखोरी का अध्ययन किया। श्रीवास्तव (2002) ने भारतीय सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया। आहूजा (2007) ने सामाजिक समस्याओं के बारे में बताया कि नशाखोरी युवाओं में एक गम्भीर समस्या है। मालवीय तथा दुबे (2016) ने राहुल नगर में रह रहे गन्दी बस्ती के युवाओं में मादक पदार्थों के सेवन की स्थिति के बारे में अध्ययन किया था।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. गाँव के युवावर्ग में बढ़ती हुई नशाखोरी की समस्या एवं समाधान का अध्ययन करना।
2. युवावर्ग में बढ़ती हुई नशाखोरी के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्तियों का अध्ययन करना।
3. युवा वर्ग में प्रयोग किये जाने वाले मादक पदार्थों का अध्ययन करना।
4. युवा वर्ग में प्रयोग किये गये मादक पदार्थों के सेवन की अवधि का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र एवं पद्धति

शोध हेतु उद्देश्यपूर्ण प्रणाली के आधार पर उत्तरप्रदेश के फीरोजाबाद की तहसील शिकोहाबाद में दो गाँव लभौया तथा कुढ़ी स्थित हैं, शोध कार्य में दैव–निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। आँकडों के लिए प्रश्नावली अनुसूची का प्रयोग किया गया है जिसमें तथ्यों के संकलन हेतु 50 सूचनादाताओं से साक्षात्कार लिया गया है।

उपकल्पनायें

1. गाँव के युवा वर्ग में बढ़ती हुई नशाखोरी की समस्या व समाधान का अध्ययन किया गया।
2. युवा वर्ग में बढ़ती हुई नशाखोरी के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्तियों का बुरा प्रभाव पड़ता है।
3. युवा वर्ग में प्रयोग किये जाने वाले मादक पदार्थों का बुरा प्रभाव पड़ता है।
4. युवा वर्ग में प्रयोग किये गये मादक पदार्थों के सेवन की अवधि का गलत प्रभाव हुआ।

उपलब्धियाँ

गाँव के युवा वर्ग में बढ़ती हुई नशाखोरी के कारणों को जानने के लिए सूचनादाताओं से निम्नलिखित प्रश्न पूछे गये। सर्वप्रथम पूछा गया कि मादक द्रव्य के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्ति कौन हैं, इस सम्बन्ध में उनके प्रत्युत्तर सारणी संख्या–1 में प्रदर्षित किये गये है :

तालिका 1: मादक पदार्थ के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्ति

प्रेरक व्यक्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
मित्र	23	46
सहपाठी	12	24
पड़ोसी	120	20
स्वयं जिज्ञासावश	05	10
योग	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित अधिकतर नशा सेवन करने वाले व्यक्तियों में अपने मित्र 46 प्रतिशत को नशा के लिए प्रेरित करने का मुख्य कारण बताया है। 24 प्रतिशत ने सहपाठी, 20 प्रतिशत ने पड़ोसी तथा 10 प्रतिशत ने व्यक्ति को जिज्ञासावश नशा की आदत वाला व्यक्ति माना है। अतः स्पष्ट है कि नशे की आदत को प्रोत्साहित करने वालों में मित्र व सहपाठी प्रमुख हैं। ये सभी समान आयु समूह के सदस्य हैं। बहुधा नशा करने वाला व्यक्ति आर्थिक दबाव में होता है और वह अपने सहपाठी को इस आदत का शिकार बनाकर स्वयं खरीद करने में उससे पैसा लेता है।

प्रयोग किया जाने वाला पदार्थ

सूचनादाताओं से पूछा गया कि प्रयोग किये जाने वाले मादक पदार्थ द्रव्य क्या हैं? इस सम्बन्ध में उनके उत्तर सारणी संख्या–2 में प्रदर्शित किये गये है।

तलिका 2: प्रयोग किये जाने वाले मादक पदार्थों के नाम का विवरण

नशीली वस्तु	प्रतिदिन	कभी–कभी	कभी नहीं	योग
पान, बीड़ी, सिगरेट, गोल्डमोहर, राजश्री, विमल, सुर्ती	50	–	–	50
गाँजा, भाँग, शराब, हशीश, आदि	15 (30 प्रतिशत)	35 (70 प्रतिशत)	–	50
हेरोइन, कोकीन, ब्राउन सुगर, स्मैक, आदि	5 (10 प्रतिशत)	–	45 (90 प्रतिशत)	50
इन्जेक्शन	7 (14 प्रतिशत)	–	43 (86 प्रतिशत)	50

सारणी द्वारा स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित सभी सूचनादाता धूम्रपान की वस्तु के रूप में पान, बीड़ी, सिगरेट, गोल्डमोहर, आदि का प्रयोग करते हैं। गाँजा, भाँग, शराब, हशीश, आदि का प्रयोग 70 प्रतिशत सूचनादाता कभी–कभी करते हैं जबकि 30 प्रतिशत सूचनादाता प्रतिदिन करते हैं। हेरोइन, कोकीन, ग्राउन सुगर, स्मैक आदि का सेवन 10 प्रतिशत सूचनादाता ही प्रतिदिन करते हैं। ड्रग्स का इंजेन्शन के रूप में प्रयोग भी केवल 14 प्रतिशत सूचनादाता ही करते हैं।

मादक पदार्थों के सेवन की अवधि

सूचनादाताओं से पूछा गया कि मादक द्रव्य सेवन करने का कितना समय हो चुका है? इस सम्बन्ध में उनके उत्तर सारणी संख्या–3 में दिये गये हैं–

तालिका 3: मादक पदार्थों के सेवन की अवधि

अवधि	आवृत्ति	प्रतिशत
1 – 3 वर्ष	32	64
4 – 6 वर्ष	12	24
7 – 9 वर्ष	06	12
योग	50	100

उपर्युक्त सारणी द्वारा स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित सूचनादाताओं में मादक द्रव्यों की आदत एक वर्ष से लेकर 9 वर्ष तक विस्तृत रूप से पायी गयी है। 64 प्रतिशत सूचनादाता 1–3 वर्ष नशीली वस्तुओं का सेवन कर रहे हैं, 24 प्रतिशत सूचनादाता 4–6 वर्ष से नशीली वस्तुओं का सेवन कर रहे जबकि 12 प्रतिशत 7–9 वर्ष से नशीली वस्तुओं का सेवन कर रहे हैं।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट होता है कि समन्वयस्क आयु समूह का प्रभाव व्यक्तिगत स्तर पर आनन्द की अनुभूति और तनाव से मुक्ति मादक पदार्थ सेवन का प्रमुख कारण है। ये सूचनादाता मादक पदार्थ की लोकप्रियता की चरम स्थिति में पहुँचाने की कोशिश करते हैं। क्षेत्रीय अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षित युवा वर्ग रुपये की तंगी हालत में चोरी, राहजनी, गैरकानूनी कार्य में अपने को लिप्त की लेते हैं जिससे नशे की लत को पूरा किया जा सके। अध्ययन में सम्मिलित 50 प्रतिशत सूचनादाता आनन्द की अनुभूति के लिए नशे का सेवन करते हैं जबकि अन्य सूचनादाताओं ने निराशा व कुण्ठा से मुक्ति, थकान, से मुक्ति, और काम शक्ति में वृद्धि की अनुभूति को वरीयता प्रदान की है। परन्तु जैसे–जैसे मादक पदार्थ का आदती बन जाता है। उसकी काम शक्ति वैसे–वैसे कम होती जाती है। सभी सूचनादाता यह मानते हैं कि मादक पदार्थ के न मिलने पर शारीरिक पीड़ा अधिक होती है जिसके कारण शरीर में अगड़न, सुस्ती, एवं आलस्य उत्पन्न हो जाता है।

सुझाव

1. युवाओं में नशीले पदार्थों का सेवन न करने के लिए प्रोन्नत करने से पूर्व परिवार के बड़े लोगों को इस आदत को छुड़ाने के लिए आगे आना होगा।
2. नशेड़ियों को पुनर्वास केन्द्रों में दाखिल कर लगातार इलाज कराना होगा तथा उदार दृष्टिकोण रखना होगा। साथ ही जो नवयुवक इस दलदल में फँस गये हैं उनके आत्मविश्वास को जागृत करने की तम्बाकू, गुटखा आदि के प्रयोग को सख्ती से रोकना होगा।
3. युवाओं को नशीले पदार्थों के प्रयोग से सख्ती से रोकना होगा तथा साथ ही अच्छे क्रिया–कलापों से इस भावना से छुटकारा दिलाने की कोशिश करनी होगी।

सन्दर्भ

1. आहूजा, राय (2007): सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. खान, एम.जेड. : युवाओं में नशाखोरी–राष्ट्रीय संगोष्ठी, हौज खास, नई दिल्ली, अक्टूबर–1986, पृ0 28–30 ।
3. श्रीवास्तव, ए.आर.एन. (2002) : भारतीय सामाजिक समस्याएँ, के. के. पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद ।
4. दाम्पत्य जीवन और याददाश्त को प्रभावित करता है धूम्रपान : पर्यावरण चेतना, जनवरी–2010, अंक–9, पृ0– 31.
5. तम्बाकू से प्रतिवर्ष एक लाख लोग मरते हैं, योजना, मई 2007, अंक–12, पृ0–50 –51.
6. मालवीय, दीपक तथा दुबे, शैलजाः 'राहुलनगर' गन्दी बस्ती के युवाओं में मादक पदार्थों के सेवन की स्थिति, Remarking An Analisation, 2016, 1(4).